तृतीय अध्याय

से. रा. यात्री के आलोच्च उपन्यासों में चित्रित पात्र-परियोजना का अनुशीलन

"एकमात्र चरित्र या पात्र ही कथा का मेरुदंड है । पात्र और चरित्र के इर्द-गिर्द फैला हुआ वातावरण, परिस्थितियाँ और आवेष्टन ही लेखक या कलाकार के लिए कच्चा माल है, जिसे पक्का (मेगनिफाईड) बनाकर वह नाटक, कहानी, आख्यायिका, गदय, उपन्यास, जीवनवृत्त, आत्मचरित्र, भ्रमण वृत्तांत और महाकाव्य आदि का कलेवर तैयार करता हैं और उसे सजाता है । कथा का प्रधान लक्ष्य चरित्र-चित्रण द्वारा मानव संवेदना को जागृत करना है । इस संवेदना को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए ही वह घटनाओं का सृजन करता है और संगीत की रीति की तरह आरोह-अवरोह की गति संचलित करता, क्लाईमेक्स पर पहुँचता और उतरता है ।"[1] आधुनिक उपन्यासों में कथावस्तु के संघटन और वस्तुविन्यास से भी महत्त्वपूर्ण चरित्र-चित्रण की कुशलता है । वस्तुत: उपन्यास के पात्रों के क्रिया-कलाप से ही कथावस्तु का निर्माण होता है । किसी भी उपन्यास में जो पात्र-परियोजना की जाती है, उसका महत्त्व स्पष्ट करते हुए डॉ.त्रिभुवन सिंह लिखते है — "उपन्यासकार के लिए किसी भी चरित्र का निर्माण करना तब तक संभव नहीं है, जब तक कि वह अपनी कल्पना के संमुख किसी जीवित व्यक्ति को ला कर खडा नहीं कर लेता । बिना किसी एक निश्चित व्यक्ति को मस्तिष्क में लाये यह कभी भी संभव नहीं है कि चरित्रों में जीवन-प्रेरणादयिनी शक्ति का संचार किया जा सके । वह निश्चित व्यक्ति लेखक के आस-पास का भी हो सकता है और स्वयं लेखक भी ।"[2] पात्रों को सजीव, यथार्थ बनाने के लिए उपन्यासकार की कल्पनाशक्ति की, मानवमन के सूक्ष्म अध्ययन और उसकी कलात्मक योजना की परीक्षा होती है । आधुनिक युग में जीवन के विविध पहलुओं का यथार्थ वर्णन सिर्फ कथावस्तु के माध्यम से करना कठीण ही नहीं नामुमकिन भी है । जीवन का यथार्थ चित्रण पात्र-परियोजना के बिना पूरा हो नहीं सकता । डॉ. दंगल झाल्टे के मतानुसार - "बदलते जीवन की विभिन्न समस्याएँ, उसके अन्तर्विरोध, उसका यथार्थ रुप केवल

कथा के माध्यम से प्रस्तुत करना उपन्यासकार के लिए न केवल अधुरा अपितु असंभव-सा प्रतीत होने लगा इसीलिए जीवन की जटिलता एवं विविध भाव-भंगिमाओ का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करने के लिए उपन्यासकार के लिए पात्र तथा उनके द्वारा चरित्र-चित्रण का माध्यम ही पर्याय के रुप में दिखाई दिया ।"[3]

कथावस्तु उपन्यास का शरीर होता है और चरित्र या पात्र उसका प्राण तत्त्व होता है । शरीररुपी उपन्यास में पात्रों के बिना प्राणों का स्पंदन नहीं हो सकता । डॉ. महावीरमल लोढा कहते है - "उपन्यासकार पात्रों में प्राणों की चेतना फुंकता है । उपन्यास निश्चित जीवन दृष्टि की स्थापना के लिए पात्रों का निर्माण करता है । उपन्यास का उद्देश्य पाठकों को चरित्र से परिचित कराना है कि उसके मस्तिष्क से प्राणी बोलते हुए, घुमते हुए, जीवित मानव प्रणियों की तरह दिखें ।"[4] किसी भी उपन्यास के पात्र पाठकों पर अपना प्रभाव स्थापित करने में सक्षम हो । पाठक उपन्यास के पात्रों को सरलता से पहचान कर उनके साथ तादात्म्य का भी अनुभव महसूस करें । प्रेमचंदजी ने उपन्यास में चरित्र-चित्रण का महत्त्व स्पष्ट करते हुए लिखा है - "उपन्यास के चरित्रों का चित्रण जितना ही स्पष्ट, गहरा और विकासपूर्ण होगा, पाठकों पर उसका उतना ही गहरा असर पड़ेगा ।"[5] उपन्यास के पात्रों द्वारा ही उपन्यासकार का मूल्यांकन किया जाता है । कोई भी उपन्यासकार मनुष्य को तथा उसके जीवन को केंद्रिभूत रखकर ही उपन्यास निर्मिती करता है । डॉ. प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं - "वास्तव में उपन्यास का मूल विषय पात्र, चरित्र या मनुष्य और उसका जीवन होता है ।"[6]

कोई भी साहित्यकार किसी भी कृति की कल्पना तथा पात्रों की अचानक निर्मिती नहीं कर सकता । उसके साहित्य सृजन की पीछे उसकी अपनी अनुभूति होती है । अपनी अनुभूति को अपनी भावनाओं को ही किसी पात्र के माध्यम से निर्मित करता है । दर असल उपन्यास चरित्रों के भाव-भंगिमा से ही बन सकता है । प्रेमचंदजी कहते है - "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ ।"[7] प्रेमचंदजी के इस कथन से उपन्यास का यथार्थ रुप प्रकट होता है । चरित्र-चित्रण यह किसी भी कृति का चाहे वह कहानी या उपन्यास हो, उसका मूल आधार होता है । चरित्रों के चित्रण के माध्यम से ही मानवस्वरुप के रागों, मनोवेगों तथा मनोभावों का चित्रण किया जाता है ।

किसी भी चरित्र-चित्रण की सर्वोत्तम सफलता तब होती हैं कि उस किताब को बंद करने पर भी उस कथा के पात्र हमारी स्मृति में कायम रहें । मनुष्य प्रकृति या स्वभाव के विभिन्न पक्षों और स्तरों के सूक्ष्म अध्ययन और कम-से-कम शब्दो में चित्र उपस्थित कर सकने की योग्यता ही सफल चरित्र-चित्रण की कसौटी है ।

से.रा.यात्री के सभी उपन्यासों के पात्र और उनके चरित्र-चित्रण उपर्युक्त कसौटी पर पूरे उतरते है ।

3.1. पात्र की रचना -

3.1.1. प्रमुख पात्र -

उपन्यास में प्राय: दो प्रकार के पात्र होते है । एक प्रमुख और दूसरा गौन । प्रमुखपात्र उपन्यास में अहं भूमिका निभाते हैं । किसी भी कहानी या उपन्याम की कथावस्तु किसी एक पात्र के यथार्थ जीवन को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ उसके जीवन के अति-सूक्ष्म पहलु को उजागर करने के साथ पूरी कथा उसी पात्र के इर्द-गिर्द घुमती हैं । उसी चरित्र या पात्र को उस उपन्यास या कहानी का प्रमुख पात्र घोषित किया जाता है । उपन्यास का जो प्रमुख पात्र होता हैं उसी के आधार से कथावस्तु बढ़ती हैं । प्रमुख पात्र का चित्रण करते वक्त उसकी मनोदशा, उसका स्वभाव, रहन-सहन, उसके सामने आयी कठिनाईयों का विस्तारपूर्वक चित्रण किया जाता है । जिसप्रकार निसर्ग में एक पेड़ मुख्य होता है । उस पेड़ को छोटी, बड़ी टहनियाँ होती है, उसीप्रकार उपन्यास एक प्रमुख पेड़ अर्थात 'प्रमुख पात्र' हैं और उसे जुडी कई छोटी-छोटी टहनियाँ 'गौन पात्र' होती है ।

3.1.2. गौन पात्र -

उपन्यास की कथावस्तु में कई जगह अंशिक समय के लिए ही कुछ पात्रों का उल्लेख मिलता है उन्हें उपन्यास के गौन पात्र कहा जाता है । जिस प्रकार उपन्यास में एक मुख्य घटना होती है और उससे कई छोटी-छोटी घटनाएँ आ कर जुड जाती है, और कथावस्तु बनती है । उसी प्रकार प्रमुख पात्र के विस्तारपूर्वक चित्रण के लिए, प्रमुख पात्र के व्यक्तित्त्व को अभिव्यक्त करने के लिए कई पात्रों का अंशिक ही क्यों न हो लेकिन सहारा लिया जाता है । उस अंशिक काल के लिए उपस्थित हुए पात्रों को गौन पात्र कहा जाता है । प्रमुख पात्रों की तरह गौन पात्रों पर संख्या की मर्यादा नहीं होती । गौन पात्र कई भी हो सकते है किंतु गौन पात्रों के सहारे ही प्रमुख पात्रों का व्यक्तित्त्व निखर उठता है और उपन्यास या कहानी की कथावस्तु आगे बढ़ती है । अत: गौन पात्र कुछ ही मात्रा में क्यों न हो लेकिन महत्त्वपूर्ण होते है । गौन पात्र मुख्य पात्र को गतिमान बनाते है और मुख्य पात्र के चरित्र को अधिक प्रभावित बनाने का प्रयत्न करते हैं ।

3.2. - से.रा.यात्री के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित पात्र-परियोजना निम्न प्रकार से है । 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास में यात्रीजी ने इच्छा के विरुध्द बनायी गयी 'कॉलगर्ल' करुणा की व्यथा, मानसिक कुंठा को व्यक्त किया है । इस उपन्यास में सिर्फ तीन प्रमुख पात्र हैं- करुणा, परेश और मौसी ।

3.2.1. _ **करुणा** - 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास की नायिका 'करुणा' का मौसी द्वारा होने वाला शोषण से.रा.यात्री ने यथार्थता के साथ चित्रित किया है । करुणा एक सुशिक्षित लड़की है । आठ साल की उम्र में उसकी माँ मर गयी है । दस बरस की उम्र में उसने बड़े भाई को खो दिया, पिता कब मर गये यह तो उसे मालूम भी नहीं हैं । इस असहाय स्थिति में करुणा किसी मौसी के हाथों लग जाती है और यहीं से उसकी जिंदगी का रुख बदल जाता है । करुणा कहती है - "पिताजी हम लोगों को कब छोड़ गये हम लोगों को आभास तक नहीं और एक लड़की की जिंदगी जिसकी सुरक्षा की नियत से बढ़नेवाले हाथों में भी छलनाओं के काँटे लगे होते हैं ।"[8]

करुणा सुंदर और स्वभाव से शांत है परंतु उसका जीवन उध्वस्त होने के कारण उसकी आँखों में एक उदासी और खोयापन हैं । कम उम्र में ही जिंदगी ने उसे गंभीर बनाया है । करुणा के व्यक्तित्त्व में अनोखी कशिश हैं । उपन्यास का नायक परेश, करुणा का वर्णन करते समय कहता है - "उस लड़की में कुछ ऐसा आकर्षण था कि सामने की और उठी उसकी स्थिर निगाहों को मैं अपलक देखता रहता था ।"[9]

करुणा की विवेकबुध्दि और उसका संयम श्रेष्ट स्तर का है । वह कभी भी किसी अनजाने से घनिष्ठ मैत्री नहीं करती है । एक प्रकार की नम्रता की झलक उसके व्यक्तित्त्व में दिखाई देती है । यहीं वजह है कि पहले पहल वह परेश से बात भी नहीं करती । करुणा के विचार उच्यस्तर के है । 'सच ही है वेदना जब बोलने लगती है तब वह काव्य से भी बढ़कर होती है ।' 'करुणा' पात्र की स्थिति ऐसी ही है । करुणा के मन की व्यथा कभी-कभी उसके चेहरे पर झलकती है । करुणा अंतर्मन से पूरी तरह टूट चुकी है किंतु वह अपने दु:ख का प्रदर्शन नहीं करती । परेश जब करुणा को कहता है कि तुम अपने आप से खुश नही हो, तुम अपने आप से क्यों लड़ रही हो ? शायद यह हो सकता है कि तुम्हारे दु:ख का इलाज मेरे पास या किसी और के पास न हो । परेश के इस कथन पर करुणा कहती है - "आप व्यर्थ परेशान होते है - मैं न कहीं निरीह हुँ और न कहीं पीड़ा सहती हुँ । आप बराबर देख रहे है कि मैं खूब खाती-पीती हूँ और मजे की नींद सोती हुँ ।"[10]

करुणा ऐसा कहती तो है परंतु उसकी व्यथा अलग किस्म की है, जो प्रस्तुत करने की करुणा की हिम्मत नहीं है ।

करुणा ने परेश को लिखे खत से उसकी व्यथा की सचाई सामने आती है । करुणा अपने आप को परेश के लायक नहीं समझती । उसको यह डर लगता है कि अगर परेश को उसकी सचाई का पता चला तो वह उससे नफरत करेगा, उसकी तरफ देखेगा भी नहीं । मौसी ने उसको तथा उसके मन को कभी समझने की कोशीश नहीं की । करुणा कहती है - "मौसी ने बहुत बचपन से मेरा पालन-पोषण करके मेरी देह बचाई है (देह बची है इससे बड़ा निर्दय व्यंग्य और क्या हो सकता है ।"[11] अर्थात करुणा की देह का इस्तेमाल करके उदरनिर्वाह किया जा रहा है इससे बड़े दु:ख की बात और क्या हो सकती है । करुणा के अपने जीवन की कुछ कल्पनाएँ होंगी, कुछ ख्वाब होंगे किंतु मौसी ने कभी उनका विचार भी नहीं किया है । और युवावस्था में ही करुणा को 'कॉलगर्ल' जैसा घिनौना व्यवसाय करने पर मजबूर किया है ।

करुणा 'कॉलगर्ल' का व्यवसाय उसकी अपनी इच्छा के विरुध्द कर रही है । सच में तो करुणा को अपनी जिंदगी से घिन आ रही थी किंतु इससे छूट पाना मुश्किल था । "मनुष्य का वास्तव में अपना वहीं है, जो उस पार बाहर से लादा हुआ न हो । जो जबरदस्ती आरोपित किया गया है, आत्मा में पूरी तरह आत्मसात नहीं हुआ वंह किसी का अपना कैसे हो जायेगा ।"[12] करुणा का यह सवाल बड़ा न्हदयस्पर्शी हैं । करुणा को लगता है कि यह घिनौना जीवन मैंने अपने मन से नहीं स्वीकार हैं तो फिर यह मेरा कैसे होगा । करुणा इन सब से छुटकारा पाने के लिए तडफती है किंतु अब बहुत देर हो चुकी है, ऐसा मान कर करुणा वास्तव स्थिति का सामना करती है ।

करुणा परेश को फँसा सकती हैं किंतु ऐसा करना उसे उचित नहीं लगता है या फिर शायद उसका मन ऐसा करने को तैयार नहीं हुआ ।परेश को अपनी जिंदगी की सचाई मालुम हुई तो वह उससे नफरत करेगा ऐसा सोचकर करुणा परेश की जिंदगी से चले जाने का निर्णय लेती है । परेश के साथ करुणा का घुमना भी मौसी की नजर से व्यवहार ही था क्योंकि मौसी ने परेश से रुपयें लिये है और मौसी की यह गलतफहमी है कि करुणा को बाहर ले जाने का मुआवजा समझकर परेश उन्हें पैसे देता है ।

करुणा को मगर इसका एहसास हैं कि मौसी ने और स्वयं उसने परेश को फँसाया है इसीलिए वह कहती है - "आप को मौसी और मैंने धोखा दिया, परंतु आपने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया । मैंने इसका प्रायश्चित भी करना चाहा, आप के चरणों में बिछ जाना चाहा, पर आपको मेरा समर्पण भी नहीं भाया ।"[13]

करुणा मन से परेश को चाहती है किंतु अपना प्रेम व्यक्त करके और दु:खी बनना नहीं चाहती हैं । इसी कारण वह परेश के साथ सख्ती से पेश आती है । वह चाहती है परेश उसे भूल जायें । अपने ऐसे बर्ताव से उसे अपने आप से घृणा होती है । नये सिर से जिंदगी की शुरुआत करने का लालसा उसके मन में पैदा होती है परंतु उसे लगता है - "जीवन की सहजगति का कारवाँ मुझे छोडकर इतनी दूर निकल चुका हैं कि उसे पकड़ पाना इस जीवन में कभी संभव नहीं होगा ।"[14]

जीवन की भीषण कठोर सचाई का सामना करने वाली करुणा अंतर्मन से पुरी तरह टूट चुकी है । उसका अपने आप से चलनेवाला संघर्ष प्रभावीरीति से चित्रित करने में यात्री सफल हुए हैं । करुणा जैसी 'कॉलगर्ल' का चित्रण करते समय यात्री कहीं भी अश्लिलता, बीभत्सता का आधार नहीं लेते । अलग दृष्टि से करुणा की तरफ देखते है । इसी से ही यात्रीजी के नारीविषयक विचार कितने संयमी, स्वच्छ और पारदर्शक है इसका एहसास हो जाता है । करुणा की स्थिति को पढकर हमें देवेश ठाकूर के 'इसीलिए' उपन्यास की नायिका 'मीनाक्षी' की याद आती है । वह 'कॉलगर्ल' का व्यवसाय परिस्थिति की उपज मानती है । वह भी गृहस्थी बसाना नहीं चाहती है और नायक को धोखा देना नहीं चाहती है ।

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका करुणा का अपनी मौसी द्वारा होनेवाला शोषण देखकर लगता हैं कि नारी ही नारी का शोषण कर सकती है । मौसी अपने उदरपूर्ति के लिए करुणा के जिस्म का इस्तेमाल करती है परंतु बेसहारा, असहाय करुणा इस स्थिति को बिना विरोध किये परिस्थिति से समझोता करना चाहती है । देवेश ठाकुर के 'इसीलिए' उपन्यास की नायिका मीनाक्षी की भाँति वह परिस्थिति की उपज के रुप में 'कॉलगर्ल' का व्यवसाय करती है । आज समाज में करुणा जैसी युवतियों को ऐसे घिनौने व्यवसाय से पर्दापित करने की पूरी जिम्मेदारी समाज की है । वह सामाजिक व्यवस्था की शिकार बनी है । वह सत्य की पक्षधर होने के नाते परेश को धोखा नहीं देना चाहती । परेश को अपनी स्थिति का परिचय करा देकर उससे दूर रहना चाहती है । जीवन की भयंकरता में, संघर्षशील स्थिति में असहाय अवस्था में भी वह परेश के जीवन को ध्वस्त करना नहीं चाहती । बचपन से ही परिस्थिति के आघातों से शांत लगती है, नम्रता से ओतप्रोत है, अंदर से जरुर टूटी है परंतु बाहर से भी संयमी है, अपनी घिनौनी जिंदगी से उसे हेरी हो रही है परंतु आसानी से इस व्यूव्ह से दूर भी हो नहीं सकती है । से.रा.यात्री ने इस उपन्यास में अश्लिलता का सहारा न लेकर करुणा के चरित्र को बढावा देने का प्रयत्न किया है । करुणा के प्रति सहानुभूति दर्शाकर लेखक ने करुणा की जिंदगी की उध्वस्तता के पीछे समाज को जिम्मेदार ठहराया है । करुणा प्रवाह पतीत होकर

अपनी जिंदगी का ध्वंस खुले आँखों से देख रही है । आज महानगरो में 'कॉलगर्ल' एक गंभीर समस्या है परंतु इसके साथ-साथ 'पुरुष-वेश्या' की एक नयी संकल्पना उभर उठी है । सुरेंद्र वर्मा का उपन्यास 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता" इसका जिंदा उदाहरण हैं ।

3.2.2. परेश - 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास का नायक 'परेश' अत्यंत भावुक है । छुट्टियाँ बिताने के लिए मसूरी में आया परेश करुणा की तरफ आकृष्ठ हो जाता है । परेश विश्वविद्यालय में अध्यापक है । करुणा के प्रति उसके मन में जिज्ञासा है बाद में धीरे-धीरें वह उससे प्यार करने लगा लेकिन उसकी प्रेम कहानी असफल हो जाती है ।

यात्रीजी ने इस उपन्यास में पात्रों की रचना बड़े कौशल से की है । किसी अध्यापक के मन की प्रेमभावना को नजाकत से चित्रित करने की यात्री की शैली हमें आश्चर्य में डाल देती है । यह उपन्यास परेश के निवेदन के माध्यम से चित्रित किया गया है । पूरे उपन्यास में परेश की भाव भावनाओं का चित्रण किया है - "उस लड़की को देखकर मैंने कई बार सोचा कि मैं भी थोड़ी देर के लिए उनके पास जाऊ, मगर उधर जाने का फैसला करते ही मेरा दिल धड़कने लगता - कुर्सी से उठने पर पावों में शिथिलता आ जाती और दिमाग खाली-खाली सा लगता ।"[15] ऐसे निवेदन से यात्री ने परेश की संवेदना को दिखाया है । करुणा को मिलने के लिए परेश का मन ही उसे मजबूर करता है । करुणा की आँखों में एक उदासी देखकर ही परेश मूर्ती जैसी निश्चल करुणा की तरफ आकर्षित हो जाता है । एक ही बैंच पर बैठने के बाद भी करुणा उसकी तरफ देखती भी नहीं । उस वक्त परेश को अपने आप पर दया आती है । करुणा का भूला हुआ छाता लौटाने के हेतु से वह उससे संपर्क बनाने की कोशिश करता है और उसमें सफल होता है । करुणा और परेश में गहरी दोस्ती या पहचान हो जाती है । परेश परिवार के एक सदस्य के रुप में उनक घर में आता-जाता है । अब तक करुणा के प्रति जो उसके मन में आकर्षण था वह प्यार में बदल चुका था किंतु परेश को अपना प्यार व्यक्त करने की हिम्मत नहीं होती ।

परेश का करुणा और मौसी के बीच घुल-मिल चाना यात्रीजी ने अच्छी तरह चित्रित किया है । करुणा से प्यार करते हुए भी वह उसें नहीं बताता क्योंकि उसे डर लगता है कि शायद करुणा को यह बात पसंद भी ना हो । करुणा को अपने मन की बात बताने के बजाय वह अपने सपनों में ही खोये रहना पसंद करता है, ऐसी बात नहीं है मगर परेश के स्वभाव के अनुसार उसे यह बात बताना संभव नहीं हो पाता ।

मौसी की बीमारी की बात सुनकर परेश 'शेरीविला' में जाता है । वहाँ करुणा से बातें करते समय परेश कहता है कि नारी ने कला और साहित्य क्षेत्र में प्रथम श्रेणी की कृतियाँ दी है । इसपर करुणा अपना विचार उसे बताती है कि नारी की देन अव्यक्त और सूक्ष्म है । करुणा की बात सुनकर पलभर के लिए परेश अजीब उलझन महसूस करता है, बाद में अपना विचार व्यक्त करता है- "लेकिन यह कैसे मान लिया जाय कि स्त्रियां केवल बाहरी प्रभाव ही ग्रहण करती है-रचना की प्रक्रिया में तो प्रभाव अलक्ष्य रुप से आतें ही है । प्रभावों के बावजूद एक चीज़ स्वानुभूति भी है, फिर अनुभूति की प्रामाणिकता के लिए नारी पुरुष का भेद कहाँ रह जाता है ।"[16] यहाँ परेश के नारी के बारे में विचार व्यक्त होते है, शायद नारी और पुरुष में समाज जो भेद रखता हैं उसे परेश कड़ा विरोध करता है ।

सीमेंट्री में करुणा उसे पूछती है कि उसने किसी से प्यार किया है ? तो परेश उसे स्पष्टता से नहीं सकता कि वह उसी से (करुणा) प्यार करता है । एक दिन करुणा को खोजने आये युवक को देखकर परेश का मन उस युवक से ईर्ष्या करता है । उन दोनों के बारे में उल्टा-पुल्टा सोच कर परेश का मस्तिष्क बोझल हो जाता है । "उस क्षण शायद संसार की बडी-से-बडी नियामत भी मेरे लिए दर्द की एक तुच्छ -सी गोली के मुकाबलें में हीन सिद्ध होती है ।"[17] सच बात तो यह है कि करुणा भी परेश से प्यार करती है । यह स्वयं परेश भी जानता है फिर भी यह उलझन खत्म नहीं कर देता । परेश का बर्ताव उसके स्वभाव के अनुसार चित्रित करने में यात्री सफल हुए है इसीलिए परेश की भूमिका पर कोई आक्षेप नहीं लिया जाता है ।

परेश ने करुणा को केवल तड़फाया है, ये बात भी महत्त्वपूर्ण है । परेश ने करुणा का चारित्र्य संपन्न रुप ही पसंद किया है । उसने करुणा की बीती हुई जिंदगी के बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहा अगर करुणा कहती है कि वह बहुत गिरी हुई लड़की है तो परेश ने करुणा के वक्तव्य के पीछे का इतिहास को छुना भी नहीं चाहता । वह करुणा को जीवन संगिनी बनाना चाहता है फिर भी उसनें करुणा को अपने मन का हेतु बताया नहीं । अचानक आने वाला सेठ, लड़के के बारे में करुणा से वह जानकारी ले सकता था, किंतु परेश ऐसा नहीं करता ।

परेश संवेदनशील, भावुक है जरुर मगर वह सब कुछ समझते हुए भी नासमझ बनने की कोशिश में जुटा रहता है । इस पात्र का चित्रण कुछ व्दिधा रुप में हुआ है और इसी कारण उसकी प्रेम कहानी दु:खातिका हो जाती है । इस दर्द भरे नतीजे का परेश भी थोड़ी मात्रा में क्यों न हो लेकिन जिम्मेदार हो गया है ।

परेश एक अध्यापक होने के नाते मानवीयता का पक्षधर है । करुणा की जिंदगी के घिनौने पक्ष को उभारने की अपेक्षा दबाकर रखता है कारण उसे पता है कि करुणा की यह स्थिति समाज व्यवस्था की देन है । वह एक भोला-भोला संवेदनशील प्रेमी है, जो केवल प्रेम ही चाहता है, पिछला इतिहास नहीं । वह करुणा के प्रति अपने मन में उभरी प्रेम की भावनाओं को वाणी देना नहीं चाहता ताकि प्रेम को वाणीद्वारा मुखरित करना वह नहीं चाहता । वह भारतीय समाज में स्थित स्त्री-पुरुष भेदाभेद को नहीं मानता बल्कि स्त्री को पुरुषों की बराबरी का मानता है । उसकी विचारधारा प्रगतिशील है । वह 'कॉलगर्ल' बनी करुणा को अपनी जीवनसंगिनी बनाकर रखना चाहता है परंतु इसमें वह असफल होता है । परेश -करुणा की यह असफल प्रेम कहानी लेखक ने कुशलता के साथ चित्रित की है ।

5.2.3 - मौसी - यात्री के 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास में एक बुढ़ीया का किरदार है, जिसे करुणा अपनी मौसी कहती है । बूरी प्रवृत्ति का यह चरित्र स्पष्ट करते समय यात्री ने कहीं भी आतिशयोक्ति और प्रक्षोभ का आधार नहीं लिया है । सूखी आँखें और निरपेक्ष तना हुआ झुर्रीदार चेहरा ! परेश कहता है - "बुढ़ीया की आँखों में स्नेह और आर्द्रता नाम को भी नहीं ।"[18] बचपन में करुणा के माँ-बाप के गुजर जाने पर इसी मौसी के हाथ करुणा लग गयी थी । अब वह मौसी बूढ़ी हो चुकी है, जिसे चलने-उठने के लिए सहारे की जरुरत है । बुढ़ीया रात के समय एक मिनट के लिए भी नहीं सो पाती क्योंकि उसे अस्थेमा के दौरे पड़ते है ।

मौसी ने करुणा को पाला-पोसा मगर उसके जिस्म का पैसे कमाने के लिए इस्तेमाल किया । हालात के हाथों मजबूर हुई करुणा का मौसी शोषण करती रही । बेचारी करुणा यह अत्याचार चूपचाप सहती रही क्योंकि मौसी के सिवा उसे सहारा देने वाला और कोई न था । इसी का फायदा उठाते मौसी पैसे कमाने के लालच से पर्यटन क्षेत्र मसूरी में करुणा को लेकर आयी थी, ताकि घुमने-फिरने आयें यात्रीयों को करुणा के माध्यम से फँसाकर उनसे पैसे कमा सके ।

करुणा परेश के साथ घुमने-फिरने जाती है मगर उन दोनों के बीच कोई नाजायज़ रिश्ता नहीं है, किंतु मौसी यह बात मानने को तैयार नहीं है । मौसी परेश से बार-बार पैसे मांगती है । करुणा जब मौसी को परेश के पैसे लौटाने को कहती है तो मौसी पैसे खर्च हो जाने का बहाना कर के करुणा से कहती है - "क्या तुम परेश के साथ नहीं जाती हो ?"[19]

शायद मौसी ने परेश को करुणा का ग्राहक समझा था । मौसी बड़ी निर्दय और धूर्त स्त्री है । मौसी करुणा को उसकी उम्र से बहुत बड़ो सेठ के यहाँ शरीर बेचने को भेजती है । औरत का शोषण करनेवाली कई औरतें समाज में है जिसका प्रतिनिधित्व मौसी यह पात्र करता है ।

करुणा को 'कॉलगर्ल' बनाने का सारा दोष मौसी का है । मौसी ने बहुत बचपन से करुणा की देह तो बचाई है मगर उसके मन को समझने की कोशिश कभी नहीं की । करुणा परेश से प्यार करती है यह बात जब मौसी को पता चलती है तो वह करुणा से लड़ती, झगड़ती है । करुणा जब मौसी को वहाँ से चलने को कहती है तो मौसी बेहद खुश हो जाती है क्यों कि मौसी नहीं चाहती है कि 'सोने का अंडा देनेवाली मूर्गी' उसके हाथों से हमेशा के लिए निकल जाये।

मौसी जैसी कई नारियाँ आज भी समाज में है जो छोटी-छोटी बच्चियों को पाल-पोसकर जवानी में वेश्या बनाती है और स्वयं उनके पैसों से चैन की जिंदगी बसर करती है । ऐसी नारियों का प्रतीक मौसी को बनाकर यात्रीजी ने समाज की वास्तविकता को कौशल से चित्रित किया है ।

स्पष्ट है कि मौसी बेसहारा करुणा की सहायता तो जरुर करती है, उसे आश्रय देकर उसका पालन-पोषण करती है परंतु युवावस्था में करुणा के जिस्म का सौदा करके उसका शोषण भी करती है । आज नारी ही नारी का जानलेवा शोषण करती है, यह बात यहाँ स्पष्ट होती है । मौसी चतुर है वह परेश - करुणा के प्रेम में रोड़ा अटकाना चाहती है ताकि करुणा के रुप में उसे मिलनेवाला फायदा वह दूसरें को सौपना नहीं चाहती है ।

3.2.4. 'दराजों में बंद दस्तावेज' में चित्रित गौन पात्र

3.2.4.1.- युवक - यह पात्र करुणा का पता पूछते -पूछते 'शेरीविला' तक आता है जिसे देखकर परेश हैरान हो जाता है । यह चरित्र करुणा के कॉलगर्ल होने का शक परेश के मन में निर्माण करने के लिए ही यात्री ने चित्रित किया है । इस अयाचित युवक को नाम देने के झंझट में यात्री नहीं पड़े है मगर यह चरित्र परेश के मन में शक की खलबली मचा देता है ।

3.2.4.2. - कलकत्ते का सेठ - यह पात्र बिना किसी आगापिछा के ही मौसी और करुणा के पास आ धमकता है । मौसी भी इससे प्यार जताती है । करुणा के पत्र से यह स्पष्ट होता है कि मौसी ने जबरदस्ती से करुणा को इस कलकत्ते के सेठ के पास भेजा था । इससे यह स्पष्ट होता है कि वह सेठ करुणा के लिए आया हुआ ग्राहक था ।

3.2.4.3. - जैकलीन - यह पात्र इस उपन्यास में परेश के मन की बेचैनी तथा ईर्ष्या को व्यक्त करने के लिए ही उपस्थित किया गया है ।

3.2.4.4. - अन्य गौन पात्र - कुलीनुमा आदमी, पूराना फर्निचर उठानेवाले मजदूर, कॉटेज में परेश को खाना ला कर देनेवाला बेयरा आदि गौन पात्र अल्पमात्रा में ही उपस्थित हुए हैं

3.3. 'बीच की दरार' उपन्यास में चित्रित पात्र परियोजना का अनुशीलन

— 'बीच की दरार' यह उपन्यास किसी जमाने की प्रसिद्ध अभिनेत्री और ख्यातनाम निर्देशक इनकी पारिवारीक जिंदगी को उजागर करता है । इस उपन्यास में नीना, नागपाल और मि. मलिक यह तीन चरित्र ही प्रमुख है । इसके अलावा पर्सनेल्टीज पत्रिका के संपादक मिस्टर ग्रेवालसाहब, नीना-नागपाल की बच्चियाँ, नागपाल का सेक्रेटरी, ड्रायव्हर, और चायवाला तथा नागपाल के घर का नौकर आदि गैान पात्र इस उपन्यास में चित्रित हुए हैं, जिन्हें कोई महत्त्वपूर्ण स्थान इस उपन्यास में नहीं दिया गया है ।

3.3.1. नागपाल - से.रा.यात्री के 'बीच की दरार' इस उपन्यास का 'नागपाल' यह चरित्र फिल्मी दुनियाँ का ख्यातनाम सिने-निर्देशक हैं । नागपाल ने अत्यंत परिश्रम से अपना एक वजूद कायम बनाया है । उसने इस मकाम तक पहुँचने के लिए कई निम्न स्तर के भी काम किये हैं, जैसे-फर्श पोंछे हैं, झाडूवाले का काम किया है यहाँ तक कि चौकीदार और चायवाला भी बना है । नागपाल अपनी जिंदगी के बारे में जानकारी देने के लिए कंजुष है, ऐसी पत्रकारों में उसकी ख्याति है । नागपाल ने आज तक किसी भी पत्रकार को अपने घर पर आमांत्रित नहीं किया है और अपनी परिवरिक जिंदगी के बारे में कभी कुछ नहीं कहा है । मि. ग्रेवाल जो पर्सनेल्टीज पत्रिका के संपादक हैं, वे मि.मलिक से कहते है - "यह शक्स अपने बारे में कंजुष है - बोलता बिल्कुल नहीं सिर्फ एक रहस्यमयी मुस्कान बिखेर कर रह जाता है,

और जहाँ तक इसके परिवार का प्रश्न है वह एक शब्द भी नहीं कहता और सबसे अजीब बात यह है कि इसने किसी भी पत्रकार को अपने घर आमंत्रित नहीं किया था ।"[20] इससे नागपाल के खास स्वभाव का दर्शन होता है । यात्री ने नागपाल के व्यक्तित्त्व के बारे में पाठकों के मन में औत्सुक्य निर्माण किया है ।

समाज में नागपाल की पहचान एक अत्यंत सज्जन और सुसंस्कृत आदमी के रुप में है । नागपाल समाज को यह दिखाता है कि वह अपनी बीवी से बेहद प्यार करता है किंतु असल में वह अपनी बीवी को 'उपभोग की वस्तु' समझता है । मि. मलिक को नागपाल कहता है - "एक तो यह देखिए कि मेरी बीवी कितनी खूबसुरत और सलीकेदार है और दूसरे यह कि गौर कीजिए मैंने इसको कितनी हैन्डल विथ केयर (सावधानी से इस्तेमाल किया हैं) बरता है ।"[21] नागपाल के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि वह अपनी पत्नी को कँाच सामान की उपमा देता है । किसी जिंदा व्यक्ति को किसी वस्तु की उपमा देना यह इन्सानियत नहीं है ।

नागपाल अपने बीवी, बच्चों से जी जान से प्यार करने का दिखावा करनेवाला बहुरुपियाँ है क्योंकि उसने तो अपनी पत्नी को चार दिवारों में बंद कैदी की तरह रखा है । नागपाल के नारी विषयक विचार अत्यंत निम्नस्तर के हैं। पुरुषप्रधान संस्कृति का वारिस इस रुप में नागपाल का व्यक्तित्त्व से.रा. यात्रीजी ने समर्थता से चित्रित किया है । नागपाल अपना नारीविषयक मत स्पष्ट करते वक्त कहता है - "मैं यक़ीन के साथ कह सकता हूँ कि सुखी बीवी होना - अच्छी माँ होना किसी बड़े आर्ट से रत्ती भर कम नहीं है ।"[22] इसका अर्थ यह है कि नागपाल नारी को बस चार दिवारों में बंद करने के विचार का पक्षधर है और इसीलिए उसने अपनी पत्नी-नीना का फिल्मों में काम करना बंद किया है ।

इस उपन्यास में 'नागपाल' यह पात्र 'नारी - शोषक' की भूमिका निभाता है, किंतु नारी का शोषण करते वक्त नागपाल ने काफी सावधानी बरती है क्योंकि समाज में तो उसने सज्जन, सुसंस्कृत आदमी का लबादा ओढ़ रखा है । नीना कहती है कि नागपाल जैसे लोग दिन के वक्त एक दूसरी तरह की जिंदगी जीते हैं, लेकिन जब रात होती है तो तो अंधेरे में मानों उनकी असलियत उभरती है । ऐसे आदमियों की दिन और रात में अलग-अलग पहचान रहती है । शायद "इसीलिए नागपाल अपनी घरेलु जिंदगी को गंगाजल की तरह पवित्र और दूध जैसी उजली दिखाने के लिए बेचैन रहते है ।"[23] 'नागपाल - नीना' की सुखी जिंदगी देखने के बाद उनका साक्षात्कार लेनेवाले मलिक को भी अपना घर बसाने की चाह होती है मगर यह सब नागपाल का दिखावा है । मि. मलिक नागपाल की असलियत से बेखबर हैं । नागपाल

जब मीटिंग को जाते हैं तो नागपाल की ऊपरी तौर पर सुखी दिखाई देनेवाली पारिवारिक जिंदगी की पोल नीना के जरीयें खुल जाती है ।

"नागपाल इश्क' को दिमाग का खलल मानते है । नीना के दिमाग में शायद विठोबा का इश्क अटका हुआ है । नागपाल उसे पूरा उखाड़ तो नहीं सके किंतु उन्होंने कोशीश की है । 'हैन्डल विथ केअर' के बजाय उन्होंने नीना को रौंदा है ।"[24] इसीसे नागपाल की सच्चाई तथा असलियत स्पष्ट होती है । नागपाल मलिक को दावे साथ बताता है कि अगर तुमने ऐसी लड़की से शादी की जो किसी और से प्यार करती है और अगर शादी के बाद उसका प्रेमी आपकी पत्नी से मिलता है, तो जरुर आपकी पत्नी के विचार बदले होंगे । अर्थात अगर आपने उसे फिर अपने प्रेमी के पास जाने की अनुमति दी तो निन्यानबे नारियाँ अपने पती और बच्चों को छोंड़ जाने के लिए तैयार नहीं होंगी । नागपाल के यह विचार तो वास्तव है किंतु उसने नीना का जो शोषण किया है, वह उसके प्रकट होनेवाले विचार से विसंगत है । नागपाल के चरित्र से ऐसा लगता है कि उसके खाने के और दिखाने के दांत अलग-अलग है । नागपाल दुहरे व्यक्तित्त्व का व्यक्ति है ।

नागपाल स्वयं के बारे में जानकारी देने में कंजुष है ऐसा यात्री ने मि. ग्रेवालसाहब के जरियें सूचित किया है । फिर भी नागपाल मि. मलिक को अपने घर आमंत्रित करता है यह बड़ी आश्चर्य की बात है । अगर क्षणभर के लिए माना जाये कि नागपाल अपनी सुखी जिंदगी की प्रतिमा समाज के सामने प्रस्तुत करना चाहता है । नीना अपनी असलियत मि. मलिक को बतायेगी इस डर के बावजूद भी नागपाल मि. मलिक को नीना के साथ अकेला छोड़कर स्वंय मीटिंग में जाता है यह बात कुछ ठीक नहीं लगती है । इस तरह नीना और मि. मलिक को अकेले छोड़ जाना नागपाल के असली स्वभाव के विरुद्ध है ।

नागपाल का व्यक्तित्त्व मेहनती और जिद्दी होने के बावजूद भी उसका पारीवारिक बर्ताव देखने पर हमारे मन में घृणा और क्रोध उत्पन्न होता है । जिस व्यक्ति ने कड़ी मेहनत से अपना एक अलग वजूद कायम किया है उस व्यक्ति के दोगले स्वभाव के बर्ताव को देखने के बाद मन में खेद निर्माण होता है । से.रा. यात्री ने नकाबपोश आदमीयों का नकाब उतार कर उसकी असलियत समाज को दिखाने का कार्य मि. मलिकद्वारा किया है । 'नागपाल' यह चरित्र समाज में स्थित ऐसे नकाबपोश व्यक्तियों का प्रतिनिधी है ।

नागपाल इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है । उसका व्यक्तित्त्व दोहरा लगता है । वह समाज के सामने एक तस्वीर निर्माण करता है परंतु अंदर से बिल्कुल विपरित बर्ताव करता है । वह खुद के जीवन की जानकारी दूसरों को देने में कंजुषी दिखाता है ताकि वह अपनी प्रवृत्ति

को समाज के सामने खोलना नहीं चाहता । नारी को वह केवल उपभोग की वस्तु मानता है और पुरुष-प्रधान संस्कृति में होने वाले नारी -शोषण का वह पक्षधर बनता है । वह अपनी पत्नी को चार दीवारो में बंद करके उसकी कलाकारिता को अवरुध्द करता है । उसके नकाबधारी व्यक्तित्त्व को खोलने का प्रयत्न मि. मलिक द्वारा किया गया है । नागपाल एक प्रख्यात सिने-निर्देशक होकर भी वह समाज को दिखाता एक है और करता दूसरा ही है । उसका व्यक्तित्त्व एक रहस्यगाथा है ।

3.3.2. नीना - से.रा.यात्री के 'बीच की दरार' उपन्यास की नायिका 'नीना' एक समय की प्रसिद्ध सिने - अभिनेत्री है । नीना की अत्यंत ख्यातनाम सिने-निर्देशक नागपाल से शादी हुई है । वास्तव में 'बीच की दरार' यह उपन्यास नीना की व्यथा को अभिव्यक्त करता है । मि. मलिक द्वारा नीना के व्यक्तित्त्व का किया गया वर्णन देखने पर नीना के सौंदर्य का एहसास होता है - "ताजे मक्खन और गुलाबी रंग के संमिश्रण से जो रंग बनता है वैसा रंग उस महिला का था । लंबा कद और छरहरापन उसके देह की विशेषता थी । उसका अद्भूत, अपूर्व सौंदर्य देखने के लिए किसी की भी आँखे उसकी तरफ अनायास उठ सकती थी । उसकी देह में दुबलेपन के बावजूद एक अनोखा लोच था और उसकी सुंदरता जलानेवाली मालूम पडती थी ।"[25] किंतु धीरे-धीरे मि. मलिक समझ जाता है कि ऊपरी तौर पर सुखी दिखाई देनेवाली नीना का व्यक्तित्त्व वास्तव में असमाधानी एवं दुःखी है । मलिक कहता है - "एक समय की प्रसिद्ध अभिनेत्री जो आज लगभग गुमनामी के गर्त में समा गई थी, मुझे भीतर से बहुत बिखरी-टूटी और उदास लग रही थी । बाहर देखने पर उसके पास क्या नहीं था लेकिन वह इस सन्नाटे भरे वातावरण में भी शायद किसी कोलाहल में डूबी थी ।"[26]

नागपाल से शादी होने के पहले नीना की शादी विठोबा नामक व्यक्ति से हुई थी किंतु विठोबा ने भी नीना का शोषण ही किया । नीना जब फिल्मी दुनियाँ में सफल होने लगी तब विठोबा उस पर और अधिक अन्याय, अत्याचार करने लगा । विठोबा से नीना को एक बच्ची हुई थी तो किसी बीमारी से तुंरत मर गई । किसी दंगे-फसाद में विठोबा की भी मौत हो गई । विठोबा की मौत से नीना दुःखी नहीं हुई क्योंकि विठोबा ने उसपर काफी अत्याचार किया था । नागपाल से शादी करने पर भी नीना विठोबाद्वारा किये गये अन्याय को भूल नहीं सकी क्योंकि शोषण करने में नागपाल ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी । नागपाल ने नीना का फिल्मों में काम करना बंद किया इतना ही नहीं नीना को चार दीवारों में बंद होकर जीवन जीने को मजबूर किया ।

नागपाल की दृष्टि से अच्छी माँ होना और सुखी पत्नी होना ही नारी का जीवन है। नागपाल की इस दृष्टि का विरोध करते हुए नीना कहती है —"यह कोई जरुरी तौर पर सच नहीं कि औरतों के घर सम्हालें रहने से उनके पतियों की जिंदगी स्वर्ग बन जायें। यह सारे दावे झूठे और औरत को बहलाने-फुसलानेवाले है।"[27] नीना का यह विचार उसकी अपनी अनुभूति है। केवल घर और बच्चे इनमें जकड़े जाने की वजह से उसके व्यक्तित्त्व का विकास नहीं हो पाया यहीं कारण है कि किसी जमाने की प्रसिद्ध अभिनेत्री नीना का आज कोई वजूद नहीं रहा है। सफलता प्राप्त करने के हेतु फिल्म व्यवसाय में बड़ी हस्ती के साथ जुड़ जाना ही पडता है इसी खयाल से नीना ने नागपाल से शादी की थी। नागपाल के सहारे सफलता पाने का नीना का सपना कुछ ही दिनों में चूर-चूर हो गया।

नीना को लगता था कि नागपाल जैसे निर्देशक के साथ अपनी शादी हुई तो काफ़ी सफलता मिलेगी। नागपाल की तरह सुप्रसिद्ध अभिनेत्री का स्तर मिलेगा परंतु ऐसा कुछ भी नहीं होता। आज जब नीना इन बातों के बारें में सोचती है तो उसे अपने स्वयं के निर्णय पर अफसोस होता है - "मुझे अपने महान पतिदेव से क्या मिला ? उसने मुझे कुलजमा क्या बनाकर छोड़ा। मै साल दर - साल बच्चें जनती रंहु बिल्कुल जानवर मादा की तरह और इसी बेवकुफी में खुश होती रहुँ कि मैं एक अतिप्रसिद्ध आदमी की बीवी हूँ।"[28]

नीना की करुण जिंदगी की दु:खांतिका देखने पर पाठक हैरान हो जाता है। एक प्रसिद्ध अभिनेत्री के जीवन की करुण कहानी 'नीना' के माध्यम से चित्रित करते समय यात्री ने फिल्मी दुनिया की दिखावे की प्रवृत्ति की तरफ ध्यान न देते हुए उनके भीतरी जीवन की व्यथा को समर्थ रुप से चित्रित किया है। नीना का वर्णन करते हुए हिरेजी कहते है -

"उसकी जिंदगी घर से, यतीमों से भी गयी गुजरी है। ऊपरी तौर नीना को सबकुछ मिला था किंतु प्रसिद्ध पती, सुंदर बच्चियाँ और रजवाड़े जैसे महल से प्रसन्न न थी।"[29] क्योंकि बच्चों को जन्म देना और पती के अन्याय, अत्याचारों को सह लेना यहीं सिर्फ नारी का कर्तव्य है ऐसे नागपाल के विचार है। नीना के पास सफल, समर्थ अभिनेत्री बनने लायक गुण होने पर भी नागपाल ने उसे घर से बाहर कभी जाने नहीं दिया, अभिनेत्री बनना तो दूर की बात है।

नीना नागपाल के अन्याय से मुक्त होना चाहती है किंतु नागपाल बहुत पहुँचा हुआ और धूर्त आदमी होने के कारण नीना उसके जाल से मुक्त नहीं हो पाती। नीना नागपाल से तलाक लेना चाहती है इसका स्पष्टिकरण देते वक्त वह मलिक से कहती है - "विठोबा

की नीचताएँ मुझपर इतने नंगे ढंग से खुल गई थी कि मैं उससे कभी-न-कभी पिंड छुड़ा ही लेती - अगर वह जीना रहता तब भी मेरा शोषण हमेशा के लिए नहीं कर सकता था क्योंकि वह एक धूर्त व्यक्ति नहीं था । लेकिन इसने मुझपर अपनी शराफत का चारों तरफ से ऐसा जाल बिछा रखा है कि इसके कैदखाने से बाहर निकलना मेरे लिए आसान नहीं रह गया है ।"[30]

पुरुषप्रधान संस्कृति से शोषित हुई नारियों की व्यथा यात्रीजी ने नीना के माध्यम से चित्रित की है । नीना जैसी कई नारियों का शोषण हो रहा है किंतु वे सब अपनी किसी-न-किसी मजबूरी के कारण होनेवाले अन्याय, अत्याचार को सह लेती है । नीना की तरह उनकी भी इस अन्याय, अत्याचार से मुक्त होने की कोशिश होती है मगर वे असफल होती है यहीं बात से.रा.यात्रीजी को 'बीच की दरार' उपन्यास की नायिका 'नीना' इस चरित्र के माध्यम से समाज को दिखानी है, इसका एहसास होता है ।

भारतीय नारी संस्कृति नारी-शोषण की महागाथा है । नीना भी इस शोषण का अपवाद नहीं रही । वह अपने प्रथम पती विठोबा से भी अन्याय, अत्याचार बर्दाश्त करती रही । विठोबा की मौत के बाद कई विशिष्ट सपनों की पूर्ति के लिए वह प्रसिद्ध सिने-निर्देशक नागपाल से पुर्नविवाह करती है परंतु इस पर भी उसकी शोषणयात्रा समाप्त नहीं होती । फिल्मों में काम करने का अवसर प्राप्त होने की अपेक्षा केवल बच्चे निमार्ण करने में ही उसे अटकना पड़ता है । फिल्मों में काम करने का उसका सपना टूट जाता है । नागपाल के शोषण की जंजीरो को काटकर वह उसके फंदे से छूटना चाहती है परंतु नागपाल की चतुराई तथा धूर्तता के कारण इसमें उसे सफलता नहीं मिल पाती ।

एक प्रख्यात अभिनेत्री नीना का सभी स्तरों पर असफल होने पर उसकी पूरी जिंदगी एक दु:खगाथा बन जाती है । से.रा.यात्री ने पुरुष-प्रधान संस्कृति की कचोट में अटकी एक महान अभिनेत्री की शोषणगाथा तथा दु:खतिका का चित्रण किया है ।

3.3.3. मि. मलिक - से.रा. यात्री के 'बीच की दरार' में चित्रित सुरेंद्रनाथ मलिक फिल्मी दुनिया के ख्यातनाम निर्देशक नागपाल के वास्तव जीवन को अभिव्यक्त करने की कोशीश करता है । मिस्टर मलिक 'पर्सनेल्टीज' नामक प्रसिद्ध पत्रिका में लंबे अर्से से प्रतिनिधी का काम कर रहे है । मि. मलिक साक्षात्कार लेने की अद्भूत कला में प्रवीण है इसीलिए 'पर्सनेल्टीज' के संपादक ग्रेवाल साहब 'नागपाल' जैसे व्यस्त सिने -निर्देशक का साक्षात्कार लेने के लिए

मलिक को चुनते हैं । मि. मलिक ने उन पर सौंपी साक्षात्कार की जिम्मेदारी को बहुत खूब निभाया है ।

मि. मलिक मेहनती और जिद्दी पत्रकार है । मलिक अपनी बुध्दि तथा अपने वाक्चातुर्य से नागपाल को अपने बारें में बोलने के लिए और साक्षात्कार के लिए राजी करवाते हैं । नागपाल पहले-पहले साक्षात्कार देने को तैयार ही नहीं होता और जब तैयार होता है तो अपने परिवार के बारें में कुछ भी नहीं बोलता । उसकी बातों में उसके बच्चों के प्रति चिंता व्यक्त होती है वह अपनी पत्नी का जिक्र भी नहीं करता । "बच्चो को फख्र की चीज समझना हर तरह ठीक है लेकिन कुछ लोग तो अपनी पत्नियों को भी इस तरह साज संभालकर रखते हैं, गोया वह कोई नुमाईश में रखनेवाली चीज़ हो ।"[31] ऐसा कह कर मि. मलिक नागपाल को उसकी पत्नी के बारें में बोलने पर मजबूर करता है ।

मि. मलिक साक्षात्कार के समय नागपाल की तारीफ भी करता है । स्तुति करने से व्यक्ति सहज ही खुले दिल से सब कुछ बताने लगता है । नीना-नागपाल की परिवारीक परिस्थिति जानने के लिए वह नीना-नागपाल की सुखी गृहस्थी की तारीफ़ करता है मगर प्रशंसा करते समय वह कहता है कि आपके जैसा सुख और समाधान से भरा-पूरा परिवार देखकर मुझे भी ऐसा लगता है कि में भी शादी कर लूँ लेकिन नीना बहुत होशियार और चतुर है वह मलिक का स्वभाव जान लेती है वह मलिक से कहती है - "मुझे अब पूरी तरह भरोसा हो गया कि मि. मलिक तारीफ़ करने के आर्ट में कमाल हासिल कर चुके है ।"[32]

नागपाल के चले जाने के बाद मलिक नीना से उनकी परिवारीक जीवन की सच्चाई मालूम करने का प्रयास करता है और उसमें वह सफल भी होता है । नीना की व्यथा देखकर मलिक दु:खी होता है वह नीना का सात्वंन करने की कोशीश करते है - "नीनाजी, परिवार एक ऐसा केंद्र है जहाँ किसी-न-किसी को अपनी पहचान खोनी ही पड़ती है । आपने बहुत बड़ी कुर्बानी दी है - कुर्बानी तो अन्तत: किसी को देनी ही पड़ती है ।"[33] मि. मलिक ने जीवन का असाधारणतत्व नीना को बताया जिससे नीना का गम हल्का हो गया ।

मलिक यह पात्र उपन्यास में कमाल के स्थैर्य के साथ उपस्थित है । नीना की व्यथा से वह संवेदनशील नहीं होता और न ही नागपाल के बारें में क्रोध व्यक्त करता है । इन सभी गुणों का समावेश मत्रकार के स्वभाव तथा व्यक्तित्त्व में होना जरुरी है । इन गुणों के सहारे ही व्यक्ति अच्छा पत्रकार बन सकता है । मि. मलिक इस कसौटी पर पूरा उतरता है । सामनेवाले व्यक्ति को खुद के बारे में बोलने को मजबूर करने की कला मलिक को अच्छी तरह प्राप्त है । अत्यंत कम सवालों के जरीये उसने नीना और नागपाल का साक्षात्कार प्रस्तुत

किया है । नागपाल के लौटने के बाद मि.मलिक, नागपाल की सच्चाई जान चुका है इसका एहसास भी होने नहीं देता । लेकिन नागपाल के असली व्यक्तित्त्व को जानने के बाद मि. मलिक अनजाने में कहता है - "आदमी की देह एक अजीब धोखा है नागपाल साहब आप बाहर से देखकर अंदाजा नहीं लगा सकते । इसकी वजह हैं कि आदमी से धोखेबाज इस दुनिया में कोई प्राणी नहीं है ।"[34] यही मि. मलिक की प्रतिक्रिया ही नागपाल और नीना के वास्तव पारिवारीक जीवन पर योग्य टिप्पनी है ।

यात्रीजी ने मि. मलिक यह पात्र अत्यंत उचित पद्धति से चित्रित किया है । श्रेष्ठ पत्रकार के गुणों को मि. मलिक में दिखाकर इस चरित्र को ऊँचाई पर रखा है और यहीं वजह है कि कथावस्तु की दृष्टि से मि. मलिक यह गौन पात्र होने पर भी उसकी उपस्थिति को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता ।

मि. मलिक एक सफल पत्रकार होने के नाते नागपाल की रहस्यात्मक जिंदगी की पोल खोलता है । समाज में व्यक्ति अपने नकाबों के जरिए समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करते है परंतु असली रुप में वे अपनी वैयक्तिक जिंदगी में विकृत हो सकते है । इस पर प्रकाश डालने का काम एक पत्रकार के रुप में नागपाल के माध्यम से मलिक ने किया है । अपनी मुलाकात में कंजुषी दिखानेवाले नागपाल को उन्होंने अत्यंतिक चतुराई और कुशलता के साथ बोलने को बाध्य किया है । नागपाल की पत्नी के माध्यम से नागपाल की असलियत को प्रकाश में लाया है । वह एक गंभीर, शांत स्वभाव का पत्रकार है ।

3.3.4. - गौन पात्र - इन पात्रों के अलावा से.रा.यात्री के 'बीच की दरार' उपन्यास में गौन पात्र भी है जिनका इस उपन्यास की कथावस्तु में कोई खास महत्त्व नहीं है । पूरी कथावस्तु में पल दो पल के लिए ये सारे पात्र उपस्थित हुए है । इनका कोई खास वार्तालाप नहीं है जो कथावस्तु के लिए पूरक हो । नागपाल का सेक्रेटरी, नौकर, मिस्टर ग्रेवाल, विनायक, नागपाल की बच्चियाँ, ड्रायव्हर, रहमान, गनपत आदि गौन पात्र है ।

3.4. 'सुबह की तलाश' इस उपन्यास में चित्रित पात्र-परियोजना का अनुशीलन

से.रा.यात्री के 'सुबह की तलाश' में सतीश नामक युवक के संघर्ष की तथा सफलता की कहानी चित्रित है । इस उपन्यास में सतीश के अलावा बीना भी प्रमुख पात्र है । राकेश, राकेश के माता-पिता, बिंदु, रज्जो, फादर थोरोमन,मि.सूरी, बाजोरिया सेठ, आदि गौन पात्र हैं । इसके बावजूद और कई पात्र उपन्यास में मौजुद हैं मगर उनका अस्तित्त्व प्रभावहीन लगता है ।

3.4.1. सतीश - से.रा. यात्री लिखित 'सुबह की तलाश' उपन्यास का नायक सतीश है । सतीश एक उच्चशिक्षित किंतु बेकार युवक है । सतीश रोजगार के लिए दर-दर भटकता है मगर असफल होता है । समाज में स्थित उच्चशिक्षित बेकार युवकों के प्रतिनिधी के रुप में यात्री ने सतीश का चित्रण किया है । बेरोज़गारी आज के युवकों के सामने खड़ा एक तीव्र प्रश्न है । उच्चशिक्षित होने के बावजूद भी नौकरी न मिलना और नौकरी न मिलने के कारण युवकों की मानसिकता का बिगड जाना आदि का चित्रण सतीश के माध्यम से किया गया है । राकेश के पिताजी के मतानुसार सतीश नौकरी छोंड़ने में माहिर है किंतु सच तो यह है कि सतीश को कहीं भी उसकी मेहनत का मुआवजा नहीं मिलता हैं । इसी वजह से वह बार-बार नौकरी छोड़ता है । वर्तमान समाज की रिश्वतखोरी देखकर उसका मन बेचैन होता हैं । सतीश बिंदू से पूछे गये सवाल पर कहता है - "किस बात में स्थायित्त्व खोजूँ ? आज सारे मानदंण्ड बदल चुके हैं । सारी चीजों और रिश्तों का आधार तो आर्थिक हो गया । सिर के ऊपर छत चाहनेवाला और पेट.के निमित्त रोटी की कामना करनेवाला कभी इतनी नग्नता से पींड़ित नहीं हुआ जैसा कि आज देखने में आ रहा है । नौतिकता और संकोच, छीन-झपट और आपाधापी के नीचे पीस कर दम तोड़ चुके है ।"[35] यहाँ सतीश परिवर्तित नाते-रिश्ते पर प्रकाश डालता है । रिश्तों का स्थायित्त्व अर्थकेंद्रित है ।

सतीश एक प्रामाणिक, मेहनती और जिद्दी युवक है । हालात की थपेडों से बच-बचकर सतीश अपनी जिंदगी व्यतित करता है । समाज की भलाई के लिए अपना भी योगदान हो, यह उसकी आकांक्षा है । इसी आकांक्षा की परिपूर्ति के लिए वह अपना जीवन अपंगों की सेवा करने के लिए समर्पित करता है । इसमें सतीश की सेवापरायणता दिखाई देती हैं । सतीश राकेश की बहन 'बीना' से बेहद प्यार करता है किंतु अपनी आर्थिक हालत देखकर वह बीना से अपने प्यार का इकरार नहीं करता । कुछ शक के कारण बीना का तय किया हुआ रिश्ता टूट जाता है । राकेश से सतीश को पता चलता है कि लड़केवालों ने बीना और सतीश के संबंध में शक लिया है तो सतीश राकेश से कहता है - "मुझे क्या पता था कि मेरे वहाँ ठहरने का यह नतीजा निकलेगा । मै उस रोज वहाँ जाना ही गोल कर सकता था ।"[36] राकेश के समझाने के बाद सतीश बिना दान दहेज के बीना से शादी करता है ।

सतीश आधुनिक और स्वतंत्र विचारों का पुरस्कर्ता है । वह अपने विचार अपनी पत्नी बीना पर थोपता नहीं । सतीश 'मूक-बधिरों' के लिए 'सेवासदन' बनाना चाहता है । सतीश अपने मालिक मि. बाजोरिया सेठ की सहायता से 'मुक-प्राणी सेवासदन' नामक संस्थान खोलता है, जहाँ वह अपना जीवन 'मूक-बधिरों' की सेवा करने के लिए समार्पित करता है ।

सतीश पर सोचते हुए मुझे ऐसा लगता है कि सतीश का चित्रण एकांगी हुआ है क्योंकि यात्री ने सतीश की प्रमुख समस्या तो बेकारी की दिखाई है मगर बेकारी की समस्या उस वक्त तीव्र होती है जब पारिवारीक समस्याओं से इन्सान पीड़ित होता है परंतु यात्री ने सतीश के परिवार का उल्लेख या उसके परिवार की समस्याओं का विस्तार से उल्लेख नहीं किया हैं । अगर समाज सुधार के लिए सतीश का प्रवृत्त होने तक सतीश भावुक और संवेदनशील है, तो अपने परिवार के संमुख उतना संवेदनशील नहीं दिखाया है अर्थात सतीश की बेकारी लेखक ने तीव्रता से चित्रित नहीं की है ।

सतीश जब यमुनानगर में नौकरी करता है तो अपनी मेहनत से बाजोरिया सेठ के सभी संस्थानों को प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचाने में कामयाब होता है । सतीश नौकरी के क्षेत्र में अपने पाँव जमाने में सफल होता है ।उपन्यास के अंत में सतीश को मेहनती दिखाकर यात्री ने आज युवकों के समक्ष एक आदर्श प्रस्थापित करने का प्रयास किया है ।

3.4.2. - बीना - 'सुबह की तलाश' उपन्यास की नायिका बीना ने एम्.ए.बी.एड. तक की शिक्षा हासिल की है किंतु उसें कहीं नौकरी न मिलने के कारण वह घर के कामों में अपनी माँ का हाथ बटाती है । बीना उच्चशिक्षित होने के कारण उसके विचार आधुनिक है । बीना के घर का माहौल शिक्षित और आधुनिक न होने के कारण बीना अपने विचार व्यक्त करने में असमर्थ हैं । बीना सतीश के अलावा किसी से अपने दिल की बात नहीं कहती । बीना का बड़ा भाई - राकेश उच्चशिक्षित होने के कारण आधुनिक विचारों का पक्षधर है किंतु नौकरी के कारण वह हमेशा घर से बाहर रहता है । बीना के माता-पिता देहाती होने के कारण ही पुराने खयालों के है इसीलिए बीना के आधुनिक विचार दब जाते हैं । बीना सतीश से प्यार करती है किंतु लज्जावश वह सतीश के सामने अपने प्यार का कभी इकरार नहीं करती ।

एक दिन बीना की शादी तय हो जाती है । बीना को लड़की दिखाने की रस्म बिल्कुल पसंद नहीं है किंतु मानसिक दौर्बल्य के कारण वह यह बात अपने माँ-बाप से बिना कहे लड़की के दिखाने की रस्म निभाती है । बीना लड़की दिखाने की रीति का निषेध करते समय उदास मन से सतीश को कहती है - "अपना देश कितना महान है और कितनी उत्कृष्ठ परांपराओं से विभुषित है कि जहाँ औरतें नुमाइश की चीजें होती है ।"[37] बीना इस परंपरागत रीति को अमान्य करती है जिसमें औरतों को प्रदर्शनीय बनाया जाता है किंतु बीना अपने यह विचार भी घर में कह नहीं पाती यहीं उसकी मानसिक दुर्बलता है । बीना स्वंतत्र विचारों की स्त्री

होने के कारण अपना अस्तित्त्व बनाये रखने की असफल कोशिश करती है । बीना सतीश को कहती है - "मैं किसी को पसंद आ जाऊँ क्या यहीं काफ़ी है मेरी पसंद या नापसंद का कोई अर्थ नहीं है ?"[38] इस कथन से बीना के आधुनिक विचार स्पष्ट होते तो है किंतु यह विचार सिर्फ सतीश तक ही सीमित है । बीना का तय किया हुआ रिश्ता जब टूट जाता है तो वह अंदर से टूट जाती है, खोखली हो जाती है । वह सतीश को याद करती है वह भी मन-ही-मन में । राकेश जब बीना की शादी सतीश से करना चाहता है तो बीना खुशी से झुम उठती है । बीना भी सतीश से शादी करने बाद अपना जीवन सतीश की तरह मूक-बधीर बच्चो की सेवा में समर्पित करती है ।

यात्री ने बीना को उच्चशिक्षित दिखाया है परंतु बीना के जीवनविषयक विचारों को सतीश के अलवा अन्य किसी के समक्ष व्यक्त करते नहीं दिखाया है । एक तरफ बीना स्वयं सतीश से प्यार करती है फिर भी वह माँ-बाप द्वारा तय किया हुआ रिश्ता स्वीकार कर लेती है तो दूसरी तरफ समाज को दोष देती है कि समाज नारी को नुमाइश की चीज बनाता है । इसतरह उपन्यास का बीना यह पात्र दो नावों पर सवार हुआ दिखाई देता है । इस पात्र को अपनी एक निश्चित विचार दिशा नहीं है । अगर बीना परंपरागत रीति से नफरत करती है तो वह स्वंय लड़की दिखाने की रस्म निभाती है यह विरोधाभास इस उपन्यास में आया है और दूसरी बात यह है कि पूरे उपन्यास में बीना के सामाजिक विचार कहीं भी दिखाई नहीं देते फिर भी वह शादी के बाद अपना तो यह निर्णय बीना का स्वयं का था या पतीद्वारा स्वीकारा जाने के कारण बीना भी अपना जीवन समाज कार्य में समर्पित कर देती है अपना जीवन समाज कार्य में समर्पित करती है इसका यात्री ने कहीं भी उल्लेख नहीं किया है ।

बीना का किरदार वैशिष्ट्यपूर्ण अभिव्यक्त करने का अवसर होने पर भी यात्रीजी ने उसका अस्पष्ट चित्रण किया है । उच्चशिक्षित होने पर भी उसकी बेकारी की समस्या और परिवार द्वारा उपेक्षित बीना की कुंठित अवस्था उपन्यास को अच्छा परिणाम दे सकती थी मगर यात्रीजी ने वह अवसर खो दिया है । स्पष्ट है कि बीना यहाँ दोहरे व्यक्तित्त्व का पात्र है ।

3. गौन पात्र - से.रा.लिखित 'सुबह की तलाश' उपन्यास में राकेश, राकेश की माता, राकेश के पिता, बिंदु, रज्जो, मिस्टर सूरी , मि. बाजोरिया सेठ, फादर थोरोमन आदि गौन पात्रों का चित्रण आया है । गौन पात्रों के सहारे कहानी आगे बढ़ती है ।

3. राकेश - राकेश बीना का बड़ा भाई है । वह उच्चशिक्षित होने के साथ ऑडिटर है । राकेश नौकरी के सिलसिले में हमेशा घर से बाहर रहता है । राकेश सतीश का अच्छा दोस्त है और आधुनिक, स्वतंत्र विचारों का है । बीना के साथ राकेश का व्यवहार ममत्व तथा स्नेहपूर्ण है । बीना का विवाह तय होते समय राकेश नौकरी के कारण उपस्थित नहीं था लेकिन जब सतीश से राकेश यह सुनता है कि लड़का एकदम फर्स्ट क्लास है तो राकेश को तसल्ली हो जाती है कि बीना को अच्छा घर और पती मिलने से बीना खुश रहेगी । इसी दौरान सतीश नौकरी के लिए यमुनानगर जाता है । कुछ महिनों बाद बीना का तय किया हुआ रिश्ता टूट जाता है ।

बहन की शादी टूट जाने से राकेश के दिल को सदमा पहुँचता है । लड़केवालों ने दहेज के कारण रिश्ता तोड़ा था किंतु रिश्ता तोड़ने की वजह यह बतायी थी कि सतीश और बीना के बीच प्यार का रिश्ता है । जब राकेश को सचाई पता चलती है तब वह कहता है — "अब इसको लेकर मरा तो जा नहीं सकता । बस इसका शुभपक्ष यहीं है कि यह आरोप शादी से पहले लगाकर उन्होंने अपने दिल का कलापन उजागर कर दिया है । सोचो अगर यह तोहमत लगाने का काम उन्होंने शादी के बाद किया होता तो हम लोग तो उजड़ ही जाते ।"[39] राकेश के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि दहेज न मिलने से लडकेवाले रिश्ता तोडना चाहते थे और उन्होंने सतीश और बीना पर शक करते हुए अपने हाथ निकाल लिए अर्थात रिश्ता तोड़ दिया । बीना का रिश्ता टूट जाता है तो सतीश दु:ख व्यक्त करता है तो राकेश सतीश को लडकेवालों की असलियत बताता है और कहता है - "इसीलिए मुझे इस रिश्ते के टूटने का न कोई दर्द है, न अफसोस"[40] राकेश सतीश को समझा-बुझाकर बीना से शादी करने को राजी करता है । राकेश अपने माता-पिता के खिलाफ जा कर बीना और सतीश की शादी कर देता है ।

राकेश यह पात्र प्रस्तुत उपन्यास में हमारी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वह नायक सतीश और बीना की शादी करवा देता है । समाज की पूरानी रस्म, उच्च -नीच का भेदाभेद राकेश नहीं मानता । वह अपनी बहन की खुशी के लिए अपने माता-पिता का विरोध सहते हुए सतीश और बीना की शादी कर देता है, इससे राकेश के बडप्पन का परिचय प्राप्त होता है परंतु यात्री ने राकेश को अल्प काल के लिए उपन्यास में चित्रित किया है । हो सके तो राकेश को भी उसके गुण और विचारों के आधार पर इस उपन्यास का प्रमुख पात्र बनाना यात्रीजी के लिए मुश्किल नहीं था ।

३. **राकेश की माता** — राकेश के घर का माहौल बिल्कुल देहाती है । राकेश की माँ और बाबुजी अनपढ़ है इसीलिए राकेश के माता-पिता पूराने खयाल के अनुसार चलते है ।

राकेश की माँ घरेलु स्त्री है । उसका घर के सभी सदस्यों के साथ ममत्व का व्यवहार है । राकेश की माँ देहाती होने के कारण उसकी भाषा पर गाँव की बोली भाषा का प्रभाव दिखाई देता है । राकेश की माँ की बोली भाषा के प्रयोग में कई अंग्रेजी शब्द भी आते है, जैसे—"बेटा ! बीनु तेरे लैंया परामठे लाय रही है - चल डाइनिंग टेबल पै बैंठ ।"[41]

राकेश की माँ अपनी संस्कृति, परांपरा, रीति रस्म को मानती है । राकेश माँ को बताता है कि वह बीना की शादी सतीश से करने जा रहा है, तो राकेश की माँ एकदम बौखला उठती है किंतु ज्यादा विरोध नहीं करती क्योंकि बीना का रिश्ता टूट जाने से वह दु:खी है और चाहती है कि बीना की शादी जलद-से-जल्द हो जाये । राकेश जब अपनी माँ को बताता है कि वह बीना की शादी गाने-बजाने, जोर-शोर से करने के बजाय कोर्ट मैरिज करायेगा तो राकेश की माँ चाहती है कि बीना की शादी बड़ी जोर-शोर से हो क्योंकि बीना पढ़ी-लिखी है, कोई नंगी-गुंगी, अपाहिज नहीं है जो ऐसे बिना किसी के बुलाये शादि करें । माँ कहती है-"अये बेटा कुछ गानो-बजानो-नेग-सेग बी होय करै हैं-गाजे-बाजे बी होय करे है । कोई नंगी-बूची नाय है हमाई बीना-के ऐसेई स्वम्बर सो हैं जायगो ।"[42] लेकिन राकेश माँ की बात मानता नहीं है तो राकेश की माँ उससे कहती है - "भैया तुम लोगन की रीत-नीत कछु मेयी समझ में ना आवे है, बाकी जो तुम्हायें मन में होय वायई करो ।"[43]

इस उपन्यास में राकेश की माँ का पात्र महत्त्वपूर्ण नहीं दिखाया है और ना ही उसके अपने विचार भी दिखायें हैं । पुराने खयालों की होने के कारण पती की पसंद को ही अपनी पसंद माननेवाली है । पतीद्वारा लिया कोई भी निर्णय स्वीकार कर लेती है, यहाँ तक कि अपने मन की बात अपने पती से नहीं कहती । वास्तव में पती-पत्नी के बीच कोई तो वार्तालाप होता ही है किंतु इस उपन्यास में यात्री ने दिखाया नहीं है । अपने पती के इशारों पर चलनेवाली राकेश की माँ का किरदार इस उपन्यास में कोई खास महत्त्वपूर्ण नहीं है ।

3. **राकेश के पिता** - राकेश के पिता शिवप्रसाद नौकरी से रिटायर्ड हो चुके हैं, जो अब हमेशा घर पर ही रहते हैं । राकेश के पिता कुछ हद तक आधुनिक विचारों का समर्थन करते हैं । राकेश के पिता ने बहुत दुनिया देखी है इसीलिए वे जानते है कि आज समाज में रुपय्या ही सबसे बड़ा है । सतीश जब नौकरी छोड़ता है तो शिवप्रसाद सतीश को काफ़ी

खरी-खोटी सुनाते है । जब शिवप्रसाद अपने बड़े दामाद की मदद से सतीश को एक लोहे के कारखाने में नौकरी दिलवाते हैं तो राकेश सतीश की शिक्षा और प्रतिभा के कारण कारखाने की नौकरी का विरोध करता है । तब शिवप्रसाद समाज की कड़वी सच्चाई बताते हुए कहते है - "तो भैया, इस मुल्क में तो यह होता नहीं ... तेरी तो बहुत बड़े-बड़ों से पहचान है फिर ऐसी कोशिश कर कि इसे अमेरिका या जर्मनी-वर्मनी जाने का मौका मिल जाय । प्रतिभा की पूछ तो उन्हीं मुल्कों में है । यहाँ तो सारे धान बाईस पसेरी है ।"44

बीना का तय किया हुआ रिश्ता टूट जाता है तो राकेश बीना की शादी सतीश से करवाने का फैसला करता है तो शिवप्रसाद राकेश के फैसले को तीव्र विरोध करते है । वह अपनी बेटी की शादी दुनियावी दृष्टि से सफल और जिम्मेदार आदमी से कर देना चाहते है और शिवप्रसाद सतीश के मन में आने पर नौकरी छोड़ने की आदत से वाकिफ थे । तनख्वाह की दृष्टि से वे सतीश को असुरक्षित मानते थे क्योंकि सतीश प्राइवेट नौकरी करता है । बीना की शादी सतीश से कराने में वे अपनी अप्रतिष्ठा मानते है । वे अंत तक सतीश और बीना की शादी के खिलाफ रहे ।

शिवप्रसाद को देखने पर ऐसा लगता है कि कुछ हद तक आधुनिक संस्कारों का समर्थन करनेवाला आदमी अपनी बेटी की शादी करने की बात में बेटी की राय जानने की कोशिश नहीं करता, लगता है वह आधुनिक विचारों का समर्थन करने का दिखावा करता है । यहाँ यह भी लगता है कि शिवप्रसाद स्वयं यह जानता है कि आज दुनिया में पैसा ही सब कुछ है । नौकरी चाहे कौन-सी भी हो तनखा ही ज्यादा कीमत रखती है ।

सचमुच शिवप्रसाद आधुनिक विचारों का पक्षधर है तो वह बेटी की खुशी के लिए सतीश के साथ बेटी का विवाह करा सकता था । यात्री ने शिवप्रसाद को दो नावों पर दिखाया है । एक तरफ तो वह स्वयं को स्वतंत्र, आधुनिक विचारों का पुरस्कर्ता मानता है और दूसरी तरफ बेटी की पसंद के लड़के के साथ बेटी की शादी करवा देने में अपने घर की अप्रतिष्ठा समझता है । यहाँ शिवप्रसाद दोगले वर्तन का प्रतिनिधित्त्व करता है । यह पात्र भी दुहरे व्यक्तित्त्व का लगता है, जो सोचता एक है और करता एक है । उसका व्यक्तित्त्व खंडित लगता है ।

3. बिंदु — बिंदु सतीश के साथ बी-एस्सी. तक पढ़ी थी । बिंदु काफ़ी खुले स्वभाव की लड़की थी । बिंदु किसी कंपनी में रिसेप्शनिस्ट की नौकरी करती है । वह अपने यौवन के बल पर नौकरी हासिल करती है । उसे अपने सौंदर्य का एहसास है, जिसकी मदद से वह अपना बड़ा-बड़ा काम भी करवा सकती है चाहे फिर वह नौकरी ही हो । इसीलिए सतीश को नौकरी के लिए भटकता देख बिंदु व्यंग्य से कहती है - "वाह रे मेरे 'युनिवर्सिटी के सिकंदर'

तू पिटा भी तो किससे - नौकरी के पोरस से ।"[45] बिंदु का किसी डॉक्टर के साथ प्रणय चल रहा है किंतु बिंदु शादी नहीं करती । बिंदु शादी के बंधन को गुलामी मानती है, इसीलिए वह डॉक्टर के साथ पत्नी जैसी रहती है मगर उससे शादी नहीं करती ।

बिंदु मुक्त यौन संबंधों की पक्षधर है, जो बिना विवाह प्रेमी को पती मानकर रहना चाहती है । वह विवाह बंधन को नहीं मानती । स्त्री स्वातंत्र्य का गलत अर्थ निकालनेवाली नारियों का प्रतिनिधित्व 'बिंदु' करती है । बिंदु के जीवन जीने के विचार आम नारियों से बिल्कुल अलग हैं । उपन्यास की दृष्टि से देखा जाये तो बिंदु यह पात्र उपन्यास में कोई अहं भूमिका नहीं निभाता है ।

3. **रजनी** - रजनी बिंदु के गाँव की लड़की है जो बिंदु के घर में नौकरानी के रुप में काम करती है । रजनी को ही रज्जों नाम पुकारा जाता है । रज्जों गाँव की होने के कारण देहाती भाषा बोलती है । रज्जों बिल्कुल सीधी-साधी, घरेलु लड़की है । रज्जों भोली और निष्कपट है । सेवा परायणता रज्जों का मूल स्वभाव है । रज्जों की एक कमज़ोरी है कि वह मन के भाव ज्यादा देर तक दबा कर नहीं रख सकती । जब डॉक्टर जनार्दन घर आता है तो उपेक्षा का भाव रज्जों मन में छिपा नहीं पा रही थी, इससे यह स्पष्ट होता है कि बिंदु का अति आधुनिक बर्ताव रज्जों को बिल्कुल पसंद नहीं है ।

इस तरह यात्री के सुबह की तलाश उपन्यास में रज्जों यह पात्र प्रभावहीन होने के बावजूद भी अपने सीधे-साधे, शांत, सरल स्वभाव से अपनी छबी छोड़ता है । रज्जों भारतीय स्त्री का प्रतिनिधित्त्व करती है जो अपने पूराने रस्म, रीति-रीवाज को ज्यादा महत्त्व देती है । आधुनिकता के नाम पर उच्छृंखलता उसे पसंद नहीं है ।

3. **मि. सूरी** - मि. सूरी बाजोरिया सेठ के यहाँ मैनेजर की नौकरी करता है । मि. सूरी अत्यंत भावुक, खुले स्वभाव का है । सूरी अपने स्वभाव के कारण सब में लोकप्रिय है । मैनेजर की हैसियत होते हुए भी सूरी सतीश तथा अन्य कर्मचारियों से दोस्ती पूर्ण व्यवहार करता है । सतीश को हमेशा आगे बढ़ने के लिए तथा सफलता पाने के लिए, संघर्षो का सामना करने के लिए भी प्रेरित करता है । सूरी के निर्देशन में, उसके दोस्ती पूर्ण व्यवहार से सतीश सफलता की ऊँचाईयों को छू पाता है । सूरी सतीश के साथ घर के सदस्य जैसा बर्ताव करते हैं । सतीश जब सूरी को 'मूक-बधीर बच्चों' के लिए सेवा सदन बनाने की बात बताता है तो सूरी एकदम खूश हो कर बाजोरिया सेठ से कहकर

आश्रम बनवाने की अनुमति देता है । मि. सूरी का बडप्पन यह है कि वह सतीश को आश्रम का संस्थापक बना देते है । मि. सूरी सतीश की प्रतिभा को परख कर उसे सफल बनाते है ।

इस उपन्यास में थोड़े समय के लिए उपस्थित हुआ सूरी यह पात्र महत्त्वपूर्ण हैं । अगर मिस्टर सूरी जैसे बुजुर्ग हमारी युवापीढ़ी को प्रेरणा दे तो ही आज की पीढ़ी कुछ कर सकेगी । मि. सूरी आज के वर्तमान जीवन में हमारे बुजुर्ग लोंगों के लिए भी प्रेरक है, जो स्कूल, कॉलेजों में विद्यार्थियों का साक्षात्कार लेते हैं । अगर साक्षात्कार के समय आवेदनार्थी के मन में विश्वास निर्माण किया जाय तो वह जरुर सफल होता है । मि. सूरी के द्वारा असीम विश्वास निर्माण करने के कारण सतीश कामयाब होता है । इस तरह मि. सूरी एक आदर्श पात्र के रुप में यात्रीने इस उपन्यास में चित्रित किया है ।

3. **मि. बाजोरिया सेठ** - यमुनानगर के लोहे के कारखाने, कई स्कूलों, कॉलेजों, मिलों के मालिक मि. बाजोरिया सेठ हैं । पूरे उपन्यास में 'मि. बाजोरिया सेठ' एक मूक पात्र की तरह उपस्थित हुआ हैं । वह नाममात्र मालिक है । उनका सारा कारोबार मि. सूरी ही देखते हैं । मि. बाजोरिया अपने संस्थान के मीटिंग तथा समारोह में आते जरुर है किंतु किसी से वार्तालाप नहीं करते हैं जैसे मूक है ।

यात्री ने उपन्यास में मि. बाजोरिया सेठ को कहीं वार्तालाप करते नहीं दिखाया है । सतीश की इच्छा से जब 'मूक प्राणी सेवासदन' संस्थान बनाकर तैयार हुई तो उसके उद्घाटन समारोह पर सतीश के काफ़ी अनुरोध करने पर मि. बाजोरिया सेठ पहली बार बोले - "मुझे दो शब्द बोलने के लिए कहा गया है तो मै उतना ही बोलूंगा यानी - हार्दिक धन्यवाद ।"[46] मि. बाजोरिया सेठ के इस कथन से उनका विनोद पूर्ण तथा खुला स्वभाव स्पष्ट होता है । यात्री ने पूरे उपन्यास में बाजोरिया सेठ को मूक बनाकर यह दिखाया है कि बोलने से ज्यादा काम करना ही महत्त्वपूर्ण है । कम बोले अधिक काम करो इस उक्ति को सार्थक बनानेवाला यह पात्र है ।

3. **फादर थोरोमन** - फादर थोरोमन 'मर्सी शेल्टर' नामक संस्थान के अध्यक्ष तथा संस्थापक है । जिस संस्थान में 'मूक-बधिर' बच्चों की सेवा की जाती है तथा उन्हें पाल-पोसकर दुनिया में जिम्मेदार आदमी बनाया जाता है । फादर थोरोमन ने मानवता

का महान कार्य करने के लिए ही अपना जीवन समर्पित किया है ।

सतीश की प्रेरणाशक्ति के रुप में फादर थोरोमन का चरित्र उभरा हुआ है, जिनसे प्रेरणा लेकर सतीश जमुनानगर में 'मूक-प्राणी सेवासदन,' नामक संस्थान का निर्माण करता है ।

3. **उपन्यास के अन्य गौन पात्र** - ऊपर दिये गये गौन पात्रों के अलावा इस उपन्यास में और भी कई गौन पात्र हैं, जो उपन्यास की दृष्टि से ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं है । डॉक्टर जनार्दन, मर्सी शेल्टर की सदस्या मिस रुथ, मिस लिंडा, मिस्टर शर्मा, खोसला, हाकिम सिंह, रामकिशन, बावर्ची, जेम्स एलेन, अनारोदेवी आदि अन्य गौन पात्र हैं । ये पात्र उपन्यास में प्रासंगिक रुप में उभर उठे है ।

निष्कर्ष —

कम से कम पात्रों के सहारे यात्री ने आलोच्च उपन्यासों की रचना की हैं । कम पात्र होने के कारण उपन्यास की कथावस्तु में कोई बाधा नहीं आयी है । समाज के सामन्य व्यक्तियों में से यात्रीजी के उपन्यास का नायक अथवा नायिका होती है । यात्री के उपन्यास के पात्र सामान्य होते हुए भी असामान्य महसूस होते हैं और यात्रीजी के उपन्यास के नायक अथवा नायिका का वैचारिक स्तर भी श्रेष्ठ होता है ।

यात्रीजी पात्रों का प्रयोग सूक्ष्मता से करते हैं । उनके पात्रों की अपनी एक दृष्टि होती है, जो लेखकद्वारा थोंपी गयी नहीं होती । उनके उपन्यासों के पात्रों के अच्छे और बुरे ऐसे दोनों पक्ष होते हैं । उदा. 'दराजों में बंद दस्तावेज' का नायक करुणा से प्यार तो करता है मगर करुणा ने स्वयं अपने पूर्वायुष्य के बारे में सूचित करने पर भी परेश उसका पूर्वायुष्य जानने की कोशीश नहीं करता । परेश से उपेक्षित रह जाने के कारण करुणा को पश्चाताप होता है । अर्थात 'कोई भी इन्सान सर्वगुणसंपन्न नहीं होता' इस दृष्टि से यात्री पात्रों का निर्माण करते हैं । उनके आलोच्च उपन्यास के पात्र उनके अपने गुण और दोष के साथ व्यक्त होते है ।

'सुबह की तलाश' इस उपन्यास को छोंडकर अन्य दो उपन्यासों में यात्रीजी प्रथमपुरुषी निवेदन शैली को आधार बनाते हैं । उपन्यास का नायक ही उसके जीवन में घटित घटनाओं को बताता है ऐसा 'दराजों में बंद दस्तावेज' में है । तो पत्रकार स्वयं लिये हुए साक्षात्कार का स्वरुप 'बीच की दरार' में व्यक्त करता है, इससे यह स्पष्ट होता है कि वास्तवता का आभास निर्माण करनें में यात्री सफल हुए है ।

'सुबह की तलाश' उपन्यास में अधिक पात्र है । उपन्यास सतीश इस पात्र पर ही आधारित है, जो मानसिक स्थैर्य पाने की कोशिश करता है । इस उपन्यास में अनावश्यक पात्र भी हैं । अगर यह अनावश्यक पात्र न आये होते तो उपन्यास और भी सशक्त बन गया होता, इसमें कोई शक नहीं । 'सुबह की तलाश' उपन्यास की उपकथावस्तु में बिंदु, रज्जों ये पात्र उपन्यास की दृष्टि से कोई आवश्यक नहीं हैं ।

'बीच की दरार' उपन्यास में कम पात्र है । नागपाल, नीना और मि. मलिक यह सिर्फ तीन ही पात्र होने पर भी उपन्यास श्रेष्ठ बना है । उपन्यास साक्षात्कार की शैली के उपयोग से सफल भी बना है । नागपाल जैसे प्रसिद्ध सिने-निर्देशक का चरित्र निर्माण करते समय उसके व्यक्तित्त्व के दोहरे रुप को बड़ी अदाकारी से चित्रित किया है । नीना का व्यक्तित्त्व तो उसकी

सूक्ष्म गतिविधियों, उसके संवादो के जरिये उसकी व्यथा के साथ जींवत किया है और मिस्टर मलिक जैसे तड़फदार, जिद्दी, मेहनती आदि गुणों से युक्त पत्रकार का चित्रण भी उतना ही सफल और श्रेष्ठ है । •

विशेष बात यह है कि यात्रीजी को उपन्यास में जो समस्या चित्रित करनी होती है उस समस्या का संबंध सिर्फ नायक-नायिका तक सीमित नहीं होता तो उसका संबंध पूरे समाज से होता है । समाज में जो भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति के लोम होते हैं उनका प्रतिनिधित्त्व यात्रीजी के उपन्यास के 'चरित्र' करते हैं परंतु उनका स्वरुप प्रदर्शनीय नहीं होता है । 'करुणा' के माध्यम से यात्रीजी ने समाज की 'कॉलगर्ल' की समस्या को स्पष्ट करते वक्त कहीं भी अति रंजकता का सहारा नहीं लिया है । करूणा का 'कॉलगर्ल' के रूप में चित्रण करते वक्त उन्होंने अश्लिलता, बीभत्सता का प्रयोग किया होता तो कथाबस्तु की दृष्टि से कोई गैर न था किंतु यात्रीजी ने ऐसा न करते हुए संयम के साथ उपन्यास के चरित्रों को एक अलग ऊँचाई पर रखा है । इन पात्रों का व्यक्तित्त्व हमारे मन पर एक अमीट छाप छोड़ जाता है ।

दुष्ट प्रवृत्ति की 'मौसी' का व्यक्तिचित्र भी यात्रीजी ने बड़े संयम के साथ चित्रित किया है । 'मौसी' का चरित्र शोषक की भूमिका निभाता है किंतु अंत तक पाठकों से गोपनीय रखने में यात्री सफल हुए हैं ।

यात्रीजी के आलोच्य उपन्यासों में पात्र-परियोजना समर्थता से प्रस्तुत हुई है । यात्रीजी के उपन्यास में आनेवाले पात्र स्वतंत्र व्यक्तित्त्व, स्वतंत्र विचारों से परिपूर्ण होने के कारण पाठक उन्हें भूल नहीं सकते हैं ।

यात्री के आलोच उपन्यासों के पात्रों का विवेक और संयम उँचे दर्जे का दिखाई देता है । 'दराजों बंद दस्तावेज' की करुणा इसका उँचा उदाहरण हो सकता है । करूणा का साहित्यिक ज्ञान भी उँचे दर्जे का है । कला पर प्रस्तुत उसके विचार उसके गहरे चिंतन की निशानी है । बचपन से ही गंभीर जिंदगी, जीवन के हर पडाव पर पराजय ने उसे झुलसा दिया है फिर भी उसके व्यक्तित्त्व की ऊँचाई स्थिर दिखाई देती है । इस उपन्यास में करुणा की पिछली जिंदगी दराजों में बंद ही रही है । 'दराजों में बंद दस्तावेज' के पात्र भावुकता से उभरे हैं, वे वर्तमान की सोचते हैं, भूतकाल की नहीं ।

यात्रीजी के नारी पात्र आज़ादी की तरफ उन्मुक्त होते हैं फिर भी बाहय दबाव से दब जाते हैं । क्रांति करके खड़ा नहीं रहना चाहते । 'बीच की दरार' की नीना इसका अच्छा उदाहरण हो सकता है । वह अपने प्रसिद्ध सिने-निर्देशक पति की कचोट से छुटकारा पाने

के लिए संघर्ष की बातें सोचती है, तलाक की बातें सोचती हैं परंतु पति की लोकप्रियता के कारण वह बदनामी से बचना चाहती हैं ।

आलोच्च उपन्यासों की पात्र-परियोजनाओं पर चिंतन करते समय यह स्पष्ट होता है कि से.रा.यात्री के पात्र उलझावपूर्ण चरित्र को प्रस्तुत नहीं करते हैं । संसार के सुख-दु:ख झेलने के लिए सक्षम हैं । ये पात्र अपनी पीड़ा से ओतप्रोत हैं । आलोच्च उपन्यासों में पात्र घुटनशीलता, टुच्चापन, बौखलाहट, ईर्ष्या, व्देष आदि से परिपूर्ण लगते हैं । ये पात्र पाठकों को स्मृतिपटल पर अमीट छाप छोड़ने में सफल हुए हैं । पुरष-पात्र, नारी-पात्र , अलग-अलग प्रवृत्तियों के वाहक बन बैंठे हैं । नारी -पात्र समाज व्यवस्था के शिकार हैं - करुणा, नीना इसका अच्छा उदाहरण हो सकता हैं । पुरुष पात्रों में पुरुष प्रधान संस्कृति का अहं है, नागपाल इस अहंकार से पीड़ित है । परेश मात्र एक आदर्श पुरुष है जो पीड़ित करुणा का पूर्व-इतिहास बिना जाने इसे स्वीकार करना चाहता है । बहुत कम पात्रों के माध्यम से यात्री ने अपने उपन्यासों की रचना की है ।

से.रा.यात्री के आलोच्च उपन्यास के पात्र मध्यवर्गीय हैं । इन पात्रों की पीड़ा को लेखक ने चेतना के स्तर पर उभारा हैं । यात्री के आलोच्च उपन्यास के पात्र पीड़ादायक स्थितियों का डटकर मुकाबल करते हैं । दु:खद स्थितियों से भागते नहीं । से.रा.यात्री के पात्र संघर्ष के रास्ते को तय नहीं करते बल्कि शोषण को एक नियति मानकर चुपचाप सहते रहते है । यात्री के प्रस्तुत उपन्यास के पात्र व्दंव्द की अपेक्षा सपाट जिंदगी जीने के आदि हैं । अध्यापक परेश इसका उदाहरण है । यात्री के पात्र छोटी-छोटी खुशियों में जीते हैं । आंदोलन से वे कोसों दूर रहते हैं । ये पात्र परिस्थिति के साथ समझौता करते हैं । यात्रीजी के आलोच्च उपन्यासों की नारियाँ लेने की अपेक्षा देना अधिक चाहती हैं । उनके पात्र प्रतिदिन के संघर्ष में जीते हैं । पात्र-परियोजना में यात्री एक सफल उपन्यासकार हैं ।

संदर्भ सूची :-

1) डॉ. बेचन - आधुनिक हिंदी उपन्यास, उद्भव और विकास - सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं. 1965. पृ. 26

2) डॉ. त्रिभुवन सिंह - हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग - हिंदी प्रचारक, संस्थान वाराणसी, प्रथम सं. 1973 पृ. 36

3) डॉ. झाल्टे दंगल - उपन्यास - समीक्षा के नये प्रतिमान - वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं. 1987 पृ. 41

4) डॉ. लोढा महावीरमल - हिंदी उपन्यासों का शास्त्रीय विवेचन - रोजनलाल जैन (प्रकाशक) जयपुर, प्रथम सं. 1972 पृ. 55

5) प्रेमचंद - कुछ विचार - सरस्वती प्रेस, बनारस, चतुर्थ सं. 1949 पृ.55

6) डॉ. टंडन प्रतापनारायण - हिंदी उपन्यास कला - हिंदी समिति सूचना विभाग, उ.प्र. प्रथम सं. 1965 पृ.163.

7) प्रेमचंद - साहित्य का उद्देश्य - हंस, प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं.1967 पृ. 60

8) यात्री से.रा. - दराज़ों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ.45

9) वही - पृ.16

10) वही - पृ.44

11) वही -पृ.106

12) वही - पृ.38

13) वही -पृ.105

14) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ.108

15) वही - पृ.16

16) वही - पृ.38

17) वही - पृ.62

18) वही - पृ.20

19) वही - पृ.106

20) वही - पृ.8

21) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.17

22) वही - पृ.36

23) डॉ.हिरे एम्.बी. - कथाकार से.रा.यात्री : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व-अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. 1993 पृ.217.

24) वही - पृ.218.

25) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.36

26) वही - पृ.51

27) वही - पृ.40

28) वही - पृ.88

29) डॉ.हिरे एम्.बी. - कथाकार से.रा.यात्री : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व-अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. 1993 पृ.221.

30) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.88

31) वही - पृ.17

32) वही - पृ.43

33) वही - पृ.88

34) वही - पृ.95

35) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.22

36) वही - पृ.122

37) वही - पृ.11-12

38) वही - पृ.29

39) वही - पृ.118-119

40) वही - पृ.119

41) वही - पृ.16

42) वही - पृ.१५१

43) वही - पृ.151

44) वही - पृ.86

45) वही - पृ.19

46) वही - पृ.173